= उपसंहार =

= उपसंहार =

इस अध्याय में हम अब तक के विवेचन का सार प्रस्तुत करेंगे।

प्रथम अध्याय-प्रेमचंद: व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० में `लमही` गांव में हुआ। प्रेमचंद का बचपन का नाम धनपतराय था। पर घरमें धन का हमेशा अभाव रहता।

प्रेमचंद जाति के कायस्थ थे कायस्थोंको ` मुंशी` कहा जाता था, इसलिए वे` मुंशी प्रेमचंद` कहलाये गये। आठ साल के आयु में माता का देहांत हो गया पिता ने दूसरी शादी की लेकिन विमाता से उन्हें स्नेह मिला।

प्रेमचंद १५ साल के थे तभी उनकी शादी हो गई। शादी के कुछ दिनों बाद पिता की मृत्यु हो गयी। विमाता, ३ उसके दो बच्चे और पत्नी के पेट पालने का भार आ पडा। फटे हाल नंगे पांव प्रेमचंद गांव से चार कोस ३ बनारस पढने आते थे। भोजन के नाम पर चना-चबेना खाते थे।

प्रेमचंद की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उन्हें अपनी पढाई पूरी करने के लिए पुस्तके तथा कोट तक बेचना पडा। प्रेमचंद एक स्कूल में अध्यापक बने। प्रारंभ में उर्दू में लिखते थे बाद में हिंदी में लिखना आरंभ कर दिया। प्रेमचंद ने वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र [अपूर्ण] ये उपन्यास लिखे। इनके अन्य साहित्य में कहानी, नाटक, अनुवार ग्रंथ, निबंध आदि भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रेमचंद के इन उपन्यासों का अवलोकन करने पर इस महान कलाकार की चौंधिया देनेवाली प्रतिभा के सामने नतमस्तक हुए बिना नहीं रहा जाता। प्रेमचंद स्वाभिमानी थे। पैसे के लोभ में वे कहीं बिक नहीं सकते थे। सन १९२४ में अलवर राज्य ने उन्हें ४०० रुपया वेतन के साथ-साथ बँगला कार देने का

प्रलोभन दिया पर उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। सन १९३४ में बंबई में अजंता मूवीज से आठ नौ हजार रुपये साल का आमंत्रण मिला। गाँव-गाँव तक अपने उपन्यासों का और कहानियों का प्रचार करने के हेतु वे फिल्मों में गये लेकिन फिल्मी डायरेक्टरों की मनमानी उन्हें पसंद न आयी अत: शीघ्र ही फिल्मी दुनिया से लौट आये। उनके `सेवासदन` उपन्यास पर `बाजारे हुस्न` और `मिल मजदूरे` कहानी पर `मजदूर` फिल्म बनी।

१९३६ में प्रेमचंद बीमार रहने लगे। इसी अवस्था में `मंगलसूत्र` नामक उपन्यास प्रारंभ किया। मृत्यु से दो महीने पहले `महाजनी सभ्यता` नामक लेख लिखा। `मंगलसूत्र` ७०-७५ पृष्ठ ही लिख पाये कि उनके जीवन का दीप रोग शैय्या पर ही सन १९३६ में बुझ गया।

द्वितीय अध्याय :- प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय-

इस अध्याय में प्रेमचंद के उपन्यासों का परिचय दिया गया है।

`वरदान` उपन्यास में असफल प्रेम की कहानी चित्रित की गयी है। इसमें प्रेमचंद ने बाल्यावस्था से परस्पर परिचित दो प्रेमियों की गाथा प्रस्तुत की है। प्रताप और पूजरानी में परस्पर प्रेम है मगर उसकी शादी कमलाचरण से होती है। प्रताप साधू बनकर सेवा का व्रत लेता है।

`प्रतिज्ञा` उपन्यास में उन्होंने विधवा पूर्णा का चित्रण किया है। पति के मृत्यु के बाद वह असहाय बन जाती है। बद्रीप्रसाद उसे अपने घर ले जाते हैं। बदरी प्रसाद का पुत्र कमला प्रसाद उसके रूप पर मुग्ध होता है। अनेक प्रकार की यातनाओं को सहनकरते हुए वह वनिताश्रम में जाती है।

`सेवासदन` प्रेमचंद का वेश्या समस्या पर आधारित महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमे मध्यवर्गीय समाज जीवन की कुछ ज्वलंत समस्याओं को उठाया है, जिनमें दहेज प्रथा, अनमेल विवाह आदि महत्वपूर्ण हैं। `सेवासदन` की सुमन दहेज प्रथा के अभिशाप का प्रतीक है।

`प्रेमाश्रम` उपन्यास में प्रेमचंद ने सर्वप्रथम जमींदारी समस्या तथा जमींदारी शोषण के विरुध्द आवाज उठायी है। इस उपन्यास में जमींदारी प्रथा, शोषण प्रथा, राजनैतिक आंदोलन गांधीवादी जीवन आदि विचारों की चर्चा की है।

`निर्मला` यह एक समस्या प्रधान व उपन्यास है। इसमें दहेज प्रथा अनमेल विवाह आदि कुरीतियों की चर्चा की है। निर्मला का विवाह एक वृध्द मुन्शी तोताराम से होता है। उसके हृदय की सारी आशाएँ अतृप्त रहती हैं।

`रंगभूमि` यह प्रेमचंद का सबसे बडा उपन्यास है। इसमें अंधे सूरदास की कथा चित्रित है। प्रमुख रूपसे इस उपन्यास में जनता के शोषण देशी नरेशों और जमींदारों की स्थिति, अंग्रेजों के कूटनीति का, शोषक वर्ग की अत्याचारी मनोवृत्ति तथा सत्याग्रह आंदोलन आदि की चर्चा की है।

`कायाकल्प` कथावस्तु की दृष्टि से प्रेमचंदजी का अलग व ढंग का उपन्यास है। इसमें सर्वप्रथम लेखक ने कुछ अध्यात्मिक सूत्रों को उठाया। पूर्वजन्म और पूर्वजन्म के कल्पनात्मक चित्र इस उपन्यास में कर्म और संस्कारों के आधारपर खींचे हैं।

`गबन` समस्या प्रधान सामाजिक और प्रौढ उपन्यास है। इसमें दहेज, रिश्वत, शासन के अत्याचार, अनमेल विवाह मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक समस्या, स्त्रियों की आभूषण लालसा आदि समस्याओं का चित्रण किया है।

`कर्मभूमि` उपन्यास में वैयक्तिक मनो भावनाओं, पारिवारिक दुर्व्यवस्थाओं, सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक आंदोलनों और राष्ट्र प्रेम के लिए किये गये बलिदानों का चित्रण उपस्थित किया गया है।

`गोदान` प्रेमचंद का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है। इसमें उन्होंने किसान समस्या को उठाया हैं। इस उपन्यास को कृषक जीवन का महाकाव्य माना जाता है। इस उपन्यास को लिखने के पश्चात प्रेमचंद उपन्यास सम्राट कहे जाने लगे। यही प्रेमचंद का अंतिम पूर्ण कृति है।

तृतीय अध्याय :- प्रेमचंद के उपन्यासों में विविध समस्याएँ-

इस अध्याय में प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विविध समस्याओं का विवेचन किया गया है। प्रेमचंदने अपने युग का सूक्ष्म एवं वास्तव अध्ययन किया था। अपने युग की समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थ रूप से चित्रित करने का प्रयास किया है। उस युग की समस्याओं में शोषक और शोषित, नगर और ग्राम, नर और नारी, मजदूर और किसान आदि समाज के सभी वर्ग अंतर्भूत हो गये हैं।

प्रेमचंद एक समस्यामूलक उपन्यासकार थे। 'सेवासदन' में प्रेमचंद ने 'वेश्या समस्या' का चित्रण किया। एक ही उपन्यास में उन्होंने इस समस्या पर इतने विस्तार से वर्णन किया है कि उन्हें दूसरे उपन्यासों में इस समस्या पर विचार करने की आवश्यकता ही नहीं पडी। प्रेमचंद ने नारियों के पतन के इन कारणों को बताया है- सामाजिक कुरीतियाँ, विधवा की बुरी सामाजिक स्थिति, नारी को उचित सम्मान न मिलना, शिक्षाका अभाव, धन का लोभ, रूप का अभिमान, प्रतिव्दारा उपेक्षा इत्यादी।

इस समस्या पर प्रेमचंद इस प्रकार का उपाय भी बताते हैं - वेश्याओं को समाज से दूर स्थान पर पवित्र वातावरण में रखना चाहिए। उनकी दूसरी शादी तथा उनके रोजी-रोटी की व्यवस्था करनी चाहिए।

'विवाह से संबंधित समस्या पर भी प्रेमचंद ने अपने विचार प्रकट किये हैं। उनके विचार से सामाजिक संगठन के लिए विवाह का होना आवश्यक है। विवाह की असंगतियों के कारण समाज में अनेक कुरीतियों का जन्म होता है। सामाजिक स्वास्थ्य के लिए वैवाहिक संबंधों में असंगतिया नहीं होनी चाहिए। 'वैवाहिक समस्या' के समाधान के लिए माता-पिता, वर और कन्या इन सभी को प्रयत्न करने के लिए वे कहते हैं।

पारिवारिक समस्या पर विचार करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि अगर अपना पारिवारिक जीवन सुखमय बनाना है तो पति-पत्नी को प्रेम, सहानुभूति, सेवा, त्याग, सहिष्णुता, उदारता, समझौता आदि भावनाओंको रखना आवश्यक हैं।

पुरुष तथा नारी-मनोविज्ञान की जानकारी के अभाव को और अभिमान, निष्ठुरता, उपेक्षा, अपमान, मनोमालिन्य, असंतोष आदि को प्रेमचंद दुखी दाम्पत्य जीवन का मूल कारण मानते हैं।

युवकों में कर्तव्य भावना, सह समन्वय, मेल-जोल, आदान-प्रदान की भावना का निर्माण करने के लिए शिक्षा ही योग्य है, इस प्रकार का मत प्रेमचंद का है। इसी कारण उन्होंने शिक्षा की समस्या पर भी प्रकाश डाला है।

अछूत की समस्या पर भी प्रेमचंद विचार करते हैं। प्रेमचंद ने इस अमानवीय भाव को दूर करने का तथा अछूत वर्ग के स्वाभिमान को जागृत करने का प्रयास किया। अछूत समस्या समाज की भयंकर बीमारी है अत: वे इसे दूर करने के लिए शासकों और कुलीन कहलाने वाले लोगों से अनुरोध करते हैं कि दलितों को मानवीय अधिकार प्रदाण करें।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में युग के राजा महाराजाओं की पोल खोल दी है। ये देशी नरेश किस प्रकार अपनी प्रजापर जुल्म करते थे, इसका चित्रण प्रेमचंद ने अपने प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों में किया है। जमींदार प्रजा के रक्षक नहीं, भक्षक बन गये हैं, बगुला भगत बनकर प्रजा का शोषण करते हैं। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में इनके आलावा कारिंदे, जमींदार, आदि की भी पोल खोल दी है।

सांप्रदायिक समस्या को लेकर प्रेमचंदने हिंदू-मुस्लिम एकता का भी प्रयास किया है। इस रूप में उनके 'कर्मभूमि' और 'कायाकल्प' उपन्यास महत्वपूर्ण हैं। 'रंगभूमि' और 'गोदान' उपन्यास में प्रेमचंद ने औद्योगिक समस्या को उठाया है उन्होंने बताया है कि ऐसे औद्योगिकरण से जनता का कोई लाभ नहीं हो सकता। औद्योगीकरण को वे शोषण का हथियार मानते हैं। प्रेमचंद का साहित्य केवल भारत की स्वाधीनता का ही साहित्य नहीं वरन संसार की समस्त पीडित दुखी और शोषित जनता साहित्य है। प्रेमचंद ने साहित्य के व्दारा देश और जाती को स्वतंत्र करना चाहा।

`किसान-समस्या` का भी चित्रण प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में किया है। `गोदान` उनका किसान-समस्या संबंधित महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास के कारण ही वे उन्हें `उपन्यास सम्राट` का पद प्राप्त हुआ। इसमें बडे यथार्थ ढंग से उन्होंने किसानों की दुर्बलताओं, विशेषताओं तथा समस्याओं पर प्रकाश डाला है। किसानों की दशा को सुधारने के लिए वे उनके होनेवाले शोषण को रोकना चाहते। जब तक किसानों का शोषण बंद नहीं होता तब तक उसकी दशा में कोई सुधार नहीं हो सकता। इसके लिए किसान का शोषण करने वाले वर्ग का नाश होना आवश्यक है।

प्रेमचंद ने अपने सभी उपन्यासों में आर्थिक, सामाजिक समस्याओं के चित्रण पर जोर दिया है। कर्मभूमि गोदान को छोडकर अन्य उपन्यासों में इन समस्याओं के उत्तर भी सुझाए हैं। पहले वे समस्या को उठाते हैं फिर गांधीवादी ढंग से समाधान सुझाते हैं।

चतुर्थ अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याएँ।

इस अध्याय में प्रेमचंद ने विधवा समस्या पर प्रकाश डाला हैं। विधवा समस्या पर प्रकाश डालते हुए आर्थिक समस्या में यह बताया है कि पति के मरने के पश्चात विधवा बनी स्त्री के पास धन कमाने का कोई साधन नहीं होता और उसका जीवन नरक बन जाता है। वह अपने पुत्रियों का ब्याह तक नहीं कर सकती। इन विधवाओं को कामांध पुरुष अपनी वासना का शिकार बनाना चाहते हैं। पूर्णा जैसी सत्चरित्र की स्त्री भी कमला प्रसाद जैसे कामांध पुरुषों की नजरों की शिकार होती है। जिस घर की वह स्वामिनी होती थी पति के मर जाने के पश्चात वह एक नौकरानी की भाँति होती है। रतन के द्वारा प्रेमचंद ने यह बताने का प्रयास किया है। रतन का भतिजा मणिभूषण रतन की सारी संपत्ति हडप लेता है। प्रेमचंद युग में विधवाओं का पुनर्विवाह होने लगा था। लेकिन कुछ आलोचक इसे बुरा मानते थे। पुनर्विवाह जैसी घटना का कुछ लोगों ने खुलकर विरोध भी किया। विधवाओं की रक्षा के लिए कुछ समाज सुधारकों ने विधवा आश्रमों को निर्माण किया।

विधवा आश्रमों के नाम पर कुछ लोगोंने वेश्यालय भी खोले। विधवा स्त्री का अर्थ उसके परिवार में उसके रिश्ते के लोग होते हुए भी उसका अस्तित्व एक नौकरानी की भाँति था। कामांध पुरुष जब पूर्णा जैसी साध्वी स्त्री को अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करते है, तो उनके मन में मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है।

प्रेमचंद ने `प्रतिज्ञा`, `वरदान`, `निर्मला`, `कर्मभूमि`, `गबन` आदि उपन्यासों में विधवा समस्या को उठाया है। `प्रतिज्ञा` उपन्यास में विधवा समस्यापर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। इसमें व्याप्त अंध विश्वास, रुढियाँ आदि का पर्दाफाश किया है। अपने साहित्य के व्दारा वे समाज को जागरुक करना चाहते हैं। प्रेमचंद ने विधवा समस्या के सभी पहलूओं पर प्रकाश डालते हुए उन समस्याओं के समाधान भी सुझाते हैं। आर्थिक समस्या, कामांध पुरुषों की वासना का शिकार बन जाने की समस्या, पति के संपत्ति के उत्तराधिकार की समस्या, पुनर्विवाह की समस्या, पुनर्विवाह के निंदकों की समस्या, विधवा आश्रम की समस्या, परिवार में विधवा के अस्तित्व की समस्या, मानसिक संघर्ष की समस्या, भोजन की समस्या आदि समस्या पर प्रकाश डालते हुए विधवा विवाह, विधवा आश्रम की स्थापना, पति के संपत्ति में विधवा का हिस्सा, आदर सम्मानयुक्त-उत्तरदायित्वपूर्ण-व्यक्ति संपन्न विधवा जीवन आदि उपाय सुझाए हैं।

निष्कर्ष

प्राक्कथन में जो प्रश्न हम नें उठाये थे उन के उत्तर संक्षेप में निम्न प्रकार हैं।

१] प्रेमचंद के सभी उपन्यास समस्या प्रधान है, इस प्रकार अगर हम कहेंगे तो वह गलत न होगा। उन्होंने प्रत्येक उपन्यास में किसी एक ही समस्या को प्रमुख रूप से उठाया है, जैसे-`गोदान` उपन्यास में किसान समस्या, `प्रतिज्ञा` उपन्यास

में विधवा समस्या, ` सेवासदन ` उपन्यास में वेश्या समस्या। :
इन प्रमुख समस्याओं का चित्रण और अन्य समस्या का उल्लेख मात्र किया है।

२] प्रेमचंद एक समस्या मूलक लेखक होने के कारण उनके सभी उपन्यास समस्या प्रधान हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में निम्न समस्याओं को उठाया है- वेश्या समस्या, विवाह समस्या, पारिवारिक समस्या, शैक्षिक समस्या, अछूत समस्या, रियासतों की समस्या, सांप्रदायिक समस्या, औद्योगिक समस्या, स्वाधीनता पाने की समस्या, किसान समस्या और विधवा समस्या आदि।

३] प्रेमचंद ने विधवा समस्या का चित्रण प्रमुख रूपसे ` प्रतिज्ञा ` उपन्यास में किया है और अन्य उपन्यास- ` गबन `, ` कर्मभूमि `, ` गोदान `, ` निर्मला ` आदि उपन्यासों में विधवा समस्या का उल्लेख मात्र किया है।

४] प्रेमचंद ने विधवाओं की निम्न समस्याओं पर प्रकाश डाला है- आर्थिक समस्या, कामांध पुरुषों की वासना का शिकार बन जाने की समस्या, पति के संपत्ति के उत्तराधिकार की समस्या, पुनर्विवाह की समस्या, पुनर्विवाह के निंदकों की समस्या, विधवा आश्रम की समस्या, परिवार में विधवा के अस्तित्व की समस्या, मानसिक संघर्ष की समस्या, भोजन की समस्या।

५] प्रेमचंद ने विधवा समस्या पर प्रकाश डालते हुए निम्न चार उपाय सुझाए है-विधवा-विवाह, वनिताश्रमों की स्थापना, पति के संपत्ति में विधवा का हिस्सा, आदर सम्मानयुक्त-उत्तरदायित्वपूर्ण-व्यक्ति संपन्न [illegible] विधवा जीवन।